

# गाँधी जयंती

## प्रस्तावना

- सविनय अवज्ञा का अर्थ नागरिक कानूनों की अवज्ञा करना अर्थात् उन्हें ना मानना होता है। सविनय अवज्ञा के तहत प्रदर्शनकारियों द्वारा अपनी मांगों के लिए अहिंसा पूर्वक आंदोलन किया जाता है। महात्मा गांधी ने भी शांति पूर्वक ब्रिटिश शासन के खिलाफ सविनय अवज्ञा करते हुए आंदोलन किया था। उन्होंने अंग्रेजी सरकार के कई कठोर अधिनियमों और कानूनों के खिलाफ सविनय अवज्ञा के कई आंदोलन किए। यह गांधी जी के अवज्ञा आंदोलन ही थे, जिन्होंने अंग्रेजी हुकूमत को भारतीय जनता के संयुक्त शक्ति का एहसास कराया और देश की आजादी का मार्ग प्रशस्त किया।

## महात्मा गांधी का सविनय अवज्ञा आंदोलन

- गाँधी जी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन का उपयोग भारत से ब्रिटिश शासन को उखाड़ने के लिए किया। उनका मानना था कि अंग्रेज भारत में शासन करने में इसलिए सफल रहे, क्योंकि उन्हें भारतीयों का सहयोग मिला। गांधी जी के अनुसार अंग्रेजों को प्रशासन चलाने के अलावा अन्य कई आर्थिक और व्यापारिक कार्यों में भारतीयों के सहयोग की आवश्यकता थी। इसलिए गाँधी जी भारतीय नागरिकों से अंग्रेजी उत्पादों का पूर्ण तरीके से बहिष्कार करने की अपील की।

## सामूहिक सविनय अवज्ञा आंदोलन का मुख्य कारण

- साइमन कमीशन और रोलेट एक्ट जैसी ब्रिटिश सरकार की क्रूर नीतियों के कारण महात्मा गाँधी के पूर्ण स्वराज के सपने को एक गहरा धक्का लगा। इसके साथ ही अंग्रेजी सरकार भारत को डोमिनियन स्टेट्स देने के भी पक्ष में नहीं थी।

इन्हीं सब बातों के विरोध को लेकर गांधी जी ने पहले ही अंग्रेजी सरकार को चेतावनी दे दी थी, कि यदि भारत को पूर्ण स्वतंत्रता नहीं मिली तो अंग्रेजी हुकूमत को सामूहिक नागरिक अवज्ञा का सामना करना पड़ेगा। इन्हीं सब राजनैतिक और समाजिक कारणों ने सविनय अवज्ञा आंदोलन को जन्म दिया।

महात्मा गाँधी के नेतृत्व में सविनय अवज्ञा आंदोलन का उदय

- सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत 1919 में असहयोग आंदोलन के साथ जलियावाला बांग कांड के विरोध में हुई थी। नमक सत्याग्रह के बाद इसे काफी प्रसिद्धि मिली। महात्मा गाँधी द्वारा शुरू की गयी नमक सत्याग्रह या दांडी यात्रा को हम इसका आरंभ भी कह सकते हैं। नमक सत्याग्रह की यह यात्रा 26 दिन तक चली थी, यह यात्रा 12 मार्च 1930 से शुरू होकर 6 अप्रैल 1930 को दांडी के एक तटीय गाँव में समाप्त हुई थी।

- देखते ही देखते इसने एक बड़े अवज्ञा आंदोलन का रूप ले लिया और लोगो ने अंग्रेजी सरकार द्वारा बनाये हुए कानून को चुनौती देने के लिए भारी मात्रा में खुद से नमक बनाना शुरू कर दिया। हालांकि इस आंदोलन के फलस्वरूप काफी ज्यादा संख्या में लोगो के गिरफ्तारियां की गईं, फिर भी इस अंग्रेजी हुकूमत इस आंदोलन को रोकने में असमर्थ रही।
- इस आंदोलन के कारण लोगो ने अंग्रेजी वस्तुओं का विरोध शुरू कर दिया और स्वदेशी उत्पादों के उपयोग को अधिक महत्व देने लगे। इसके साथ ही पूरे देश भर में लोगो ने अंग्रेजी वस्त्रों को जलाना शुरू कर दिया तथा किसानों ने अंग्रेजी सरकार को कर चुकाने से भी मना कर दिया। इन सब कार्यों ने अंग्रेजी हुकूमत को झकझोर के रख दिया।

➤ इसके साथ ही गांधी जी के आदेश पर अपने विरोध की आवाज और बुलंद करने के लिए लोगो ने अंग्रेजी प्रशासन के महत्वपूर्ण ओहदों से इस्तीफा देना शुरू कर दिया। जिससे की शिक्षकों, सैनिकों और महत्वपूर्ण प्रशासनिक पदों पर कार्यरत लोगो ने देश भर हो रहे, इस आंदोलन को समर्थन देने के लिए अपने पदों से इस्तीफा दे दिया। औरतो ने भी बढ-चढ कर हिस्सा लिया, ऐसा पहली बार देखने को मिला जब महिलाओं ने इतनी बड़ी संख्या में किसी आंदोलन में हिस्सा लिया हो।

### सविनय अवज्ञा आंदोलन का प्रभाव

➤ सविनय अवज्ञा आंदोलन ने अंग्रेजी हुकूमत की नींव हिलाकर दी और उसे आर्थिक तथा प्रशासनिक स्तर पर काफी बड़ा झटका दिया। अंग्रेजी उत्पादों के बहिष्कार ने ब्रिटेन से आयात होने वाले उत्पादों को काफी बड़े स्तर पर प्रभावित किया, जिससे अंग्रेजी वस्त्रों और सिगरेट का आयात घटकर आधा हो गया।

➤ इसके साथ ही लोगो ने सरकार को कर देने से मना कर दिया और नमक के उत्पादन का कार्य भी शुरू कर दिया, जिससे कि ब्रिटिश सरकार को आर्थिक रूप से काफी क्षति पहुंची। 8 अगस्त 1942 को शुरू हुआ यह आंदोलन अंग्रेजी हुकूमत के ताबूत में आखरी कील बना। जिससे अंग्रेजो को अंततः द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात भारत को स्वतंत्रता देने के लिए राजी होना पड़ा।

### निष्कर्ष

➤ सविनय अवज्ञा आंदोलन वह अहिंसक आंदोलन था, जिसमें रक्त का एक कतरा भी नहीं बहा, फिर भी इसने भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष में एक महत्वपूर्ण योगदान निभाया। वह महात्मा गांधी ही थे, जिनके कारण भारतीय स्वाधीनता संग्राम को अंतरराष्ट्रीय मंच मिला और उनके इस दृढ़ संकल्प तथा इच्छा शक्ति का लोहा पूरे विश्व ने माना।

उन्होंने विश्व को अहिंसा की शक्ति दिखाई और लोगों को यह समझाया कि हर लड़ाई हिंसा से नहीं जीती जा सकती, बल्कि की कुछ लड़ाइया बिना खून की एक भी बूंद बहाये अहिंसा के मार्ग पर चलकर भी जीती जा सकती है।